कुंदकुंद का जन्म

दाई मां - बधाई हो बधाई हो , पुत्र रत्न हुआ हैं

(पुत्र रत्न की प्राप्ति पर नगर सेठ बहुत प्रसन्न हुआ)

पण्डित जी - ज्योतिष शास्त्र के अनुसार पद्मनंदी नाम सर्व श्रेष्ठ हैं

नगर सेठ - जाओ सारे नगर मे जन्मोत्सव की तैयारी करो

(सेठ ने नगर मे धार्मिक उत्सव करवाए)

धार्मिक उत्सव (ढोल बाजा , खुशी का माहौल)

(नगर मे सानंद उत्सव मनाया गया)

कुछ महिला रंगोली डालते हुए.

महिला 1 - सुना हैं नगर सेठ का पुत्र बहुत सुंदर हैं

महिला 2 - क्या तुमने देखा नही

(एक दिन पद्मनंदी बहुत रो रहा था, परीवार के सभी लोगो ने हर प्रकार से उसे चुप करवाने का प्रयत्न किया , [बच्चे के रोने की आवाज] किंतु व्यर्थ रहा , तब ही मन्दिर से लौटी सेठानी ने उसे गोद मे ले लिया)

सेठानी मां - सुद्धोसी बुद्धोसी निरंजनों सी , संसार माया परिवार जीतोसी × 2

सेठानी के साथ वाली - आश्चर्य, मां के द्वारा लोरी सुनाने पर यह चुप क्यों हो जाता हैं

मां - मेरा बेटा चुप क्यों होता , वह तो जागृति के गीत ही सुनना चाहता हैं

साथ वाली - अवश्य ही इस बच्चे में कोई असाधारण बात हैं, बेटा भी तो तुम्हारा हैं , तो धर्मात्मा और विवेक शील ही होगा

मां - तुम्हारा कथन सत्य हो बहन !

(पद्मानंदी कम सोता हैं , देर तक जागता है , मां से लोरियां सुनता हैं।)

लोरी .... (लोरी के बीच राजा कि entry)

(पद्मनंदी हस्ता है खेलता हैं , तरह तरह के प्रश्न करता हैं, इस बात से सेठानी चिंतित होती है , दिनों दिन उनकी चिंता बढ़ती जाती हैं और एक दिन . रात्रि को सोते समय अपने पति से कहती हैं)

सेठानी मां - देखो जी मुझे पद्म बीमार लग रहा है

सेठ - ठीक है अभी तुम आराम करो, सुबह देखेंगे

(सेठ ने प्रातः निपुण चिकित्सकों और ज्योतिषों को आमंत्रित कर समस्या से अवगत कराया , तथा उन्हें परीक्षण हेतु कहा | परीक्षण के बाद उन्होंने अपने

6:25 4G

Title

July 28 6:21 PM Fri | 6502 characters

कुंदकुंद का जन्म

दाई मां - बधाई हो बधाई हो , पुत्र रत्न हुआ हैं

(पुत्र रत्न की प्राप्ति पर नगर सेठ बहुत प्रसन्न हुआ)

पण्डित जी - ज्योतिष शास्त्र के अनुसार पद्मनंदी नाम सर्व श्रेष्ठ हैं

नगर सेठ - जाओ सारे नगर मे जन्मोत्सव की तैयारी करो

(सेठ ने नगर मे धार्मिक उत्सव करवाए)

धार्मिक उत्सव (ढोल बाजा , खुशी का माहौल)

(नगर मे सानंद उत्सव मनाया गया)

कुछ महिला रंगोली डालते हुए.

महिला 1 - सुना हैं नगर सेठ का पुत्र बहुत सुंदर हैं

महिला 2 - क्या तुमने देखा नही

(एक दिन पद्मनंदी बहुत रो रहा था, परीवार के सभी लोगो ने हर प्रकार से उसे चुप करवाने का प्रयत्न किया , [बच्चे के रोने की आवाज] किंतु व्यर्थ रहा , तब ही मन्दिर से लौटी सेठानी ने उसे गोद मे ले लिया)

सेठानी मां - सुद्धोसी बुद्धोसी निरंजनों सी , संसार माया परिवार

Reminders Skins Move to folder Encryption Remove

Title

July 28 6:21 PM Fri | 6502 characters

सेठानी मां - सुद्धोसी बुद्धोसी निरंजनों सी , संसार माया परिवार जीतोसी × 2

सेठानी के साथ वाली - आश्चर्य, मां के द्वारा लोरी सुनाने पर यह चुप क्यों हो जाता हैं

मां - मेरा बेटा चुप क्यों होता , वह तो जागृति के गीत ही सुनना चाहता हैं

साथ वाली - अवश्य ही इस बच्चे में कोई असाधारण बात हैं, बेटा भी तो तुम्हारा हैं , तो धर्मात्मा और विवेक शील ही होगा

मां - तुम्हारा कथन सत्य हो बहन !

(पद्मानंदी कम सोता हैं , देर तक जागता है , मां से लोरियां सुनता हैं।)

लोरी .... (लोरी के बीच राजा कि entry)

(पद्मनंदी हस्ता है खेलता हैं , तरह तरह के प्रश्न करता हैं, इस बात से सेठानी चिंतित होती है , दिनों दिन उनकी चिंता बढ़ती जाती हैं और एक दिन . रात्रि को सोते समय अपने पति से कहती हैं)

Reminders Skins Move to folder Encryption Remove

6:25 4G

Title

July 28 6:21 PM Fri | 6502 characters

सेठानी मां - देखो जी मुझे पद्म बीमार लग रहा है

सेठ - ठीक है अभी तुम आराम करो, सुबह देखेंगे

(सेठ ने प्रातः निपुण चिकित्सकों और ज्योतिषों को आमंत्रित कर समस्या से अवगत कराया , तथा उन्हें परीक्षण हेतु कहा |
परीक्षण के बाद उन्होंने अपने अपने सुझाव दिए)

ज्योतिष - ज्यादा थकान से निद्रा आती है , तीक्ष्ण एवम जागृत बुद्धि होने से ये बालक निद्रा नही लेता , किंतु इसमें चिंतित होने का कारण नहीं है

चिकित्सक - सेठ जी आपने हम लोगो को बुलाकर बहुत उपकार किया है ऐसे बालक के दर्शन कर के हम सब कृत - कृत्य हुए

ज्योतिष - यह बालक तेजवान महा पुरुष होगा सेठ !

सेठ - आप लोगो का कहना सत्य है किंतु...

ज्योतिष - किंतु परंतु कुछ नही इतनी आयु में ऐसे शुभ लक्षणों से युक्त बालक को नही देखा , तुम धन्य हो सेठ

(आशीर्वाद एवम शुभ वचन दे कर सभी जाने लगे और तब)

Reminders Skins Move to folder Encryption Remove

6:25 4G

Title

July 28 6:21 PM Fri | 6502 characters

(आशीर्वाद एवम शुभ वचन दे कर सभी जाने लगे और तब)

सेठ - पंडित जी दक्षिणा तो लेते जाइए ..

ज्योतिष - हमे दक्षिणा मिल गई है सेठ जी , बालक का दर्शन कर हम कृतार्थ हुए

(पुष्प की तरह प्रसन्नता के खेलते हुए पद्मानंदी 4 वर्ष का हो गया , मां ने प्रारंभिक शिक्षा देने के साथ धार्मिक शिक्षा देना भी आरंभ किया और एक दिन ...

मां - बेटा पद्म कुछ समय आकर पड़ लो

पद्म - नही मां मैं तुमसे नहीं पडूंगा ,अब तुम नई बात नही सिखाती हो मुझे

मां (मन में) - अब इस पद्म को क्या पढ़ाऊं जो कुछ मुझे ज्ञान था वह इसने कुछ महीनो में ही सीख लिया, अब इसकी जिज्ञासा कैसे शांत करूं । हा एक रास्ता अवश्य है रात को मैं पढूंगी और सुबह वही पद्म को पढ़ाऊंगी ,यही ठीक रहेगा |

सेठ - प्रिय आज कल दिन रात पुस्तकों में ही खोई रहती हो |

Reminders Skins Move to folder Encryption Remove

6:25 4G

Title

July 28 6:21 PM Fri | 6502 characters

सेठ - प्रिय आज कल दिन रात पुस्तकों में ही खोई रहती हो |

मां - कुछ देर और पड़ लू , सुबह पद्म को भी पढ़ाना है , मां बनना सरल है मां का कर्तव्य निभाना बहुत कठिन हैं | शीघ्र ही पद्म के लिए योग्य गुरु की व्यवस्था करनी चाहिए , जिससे वो भी बड़ा हो कर सूर्य के समान प्रकाशवान बने

(एक दिन प्रातः काल से ही कोंड कुंड पुर में बहुत हल चल थी , लोग प्रसन्न थे , आपस में कुछ बातें करते और जंगल की ओर बड़ जाते)

व्यक्ति 1 - अरे भाई सुबह सुबह कहा भागे चले जा रहे हो , क्या कोई संकट आ गया है

व्यक्ति 2 - यहां तुम अब तक सो रहे हो अब तो जागने का समय आ गया है

व्यक्ति 1 - तुम साफ साफ बात क्यों नहीं करते , क्या बात है

व्यक्ति 2 - तो सुनो संकट तो अब जाने वाला है , क्युकी आचार्य श्रेष्ठ जिनचंद्र को जंगल के समीप देखा गया है

Reminders Skins Move to folder Encryption Remove

6:25 4G

Title

July 28 6:21 PM Fri | 6502 characters

महल का scene

पद्म - सुनो ध्रुवेश ,आज हो क्या रहा है तुम सबको ,सुबह सुबह ही कहा

ध्रुवेष - अरे तुम्हे नही मालूम,कल शाम वयोवृद्ध आचार्य श्री जिनचंद्र जी को नगर के समीप जंगल में देखा गया है

(विश्राम कर रही मां के पास पद्म आता है और कहता है)

पद्म - मां जल्दी उठो,देखो आज सूर्य का उदय हुआ है

मां - उठ रही हु बेटे पद्म परंतु तुम्हे क्या हुआ सूर्योदय तो रोज ही होता है नया क्या है

पद्म - हां मां मैं ही क्या आज तो पूरा नगर ही धन्य होगा ,क्युकी आज के सूर्य का उदय ही ऐसा है , जिससे अज्ञान का नाश होगा, पाप गलेंगे ,ज्ञान के प्रकाश से सबको मुक्ति का मार्ग मिलेगा

मां - पहेलियां क्यों बुझाते हो पुत्र , पद्म तुम तो मुझ से ही पांडित्य करने लगे , सीधी बात बताओ ना

पद्म - बात यह है मां की आचार्य जिनचंद्र के रूप मे सूर्योदय हुआ है , वे पास के जंगल के विराजमान है , सारा नगर उनके

Reminders Skins Move to folder Encryption Remove

हुआ है , वे पास के जंगल के विराजमान है , सारा नगर उनके दर्शन करने जा रहा है मां , और मैं भी
मां - सुनो पद्म मैं भी चल रही हु

(पद्म मां की प्रतीक्षा किए बिना ही चला गया इस बात से मां सोचती है की इसे मुनिराज के प्रति इतनी श्रद्धा और निष्ठा हैं की पद्म मेरा पुत्र हो कर भी तनिक प्रतीक्षा न कर सका , सेठानी की सोच का बादल घना होने लगा,और उनके मस्तिष्क रूपी आकाश पर छा गया ,उनको अचानक पद्म के मुनि बनने का खयाल आया और वह स्वयं कहने लगी)

मां - नही नही मैं ऐसा नहीं होने दूंगी ,मेरा तो एक ही पुत्र है,मैं उसे मुनि नही बनने दूंगी ,मेरा पुत्र तो भावी नगर सेठ है और ज्ञानी भी है पद्म

(जंगल के पास सही एकत्रित होने लगे
वृक्ष के नीचे ही आचार्य श्री ध्यान मग्न है , सभी आचार्य श्री के वचनामृत पान करने की प्रतीक्षा में हैं)

6:25
4G

Title

July 28 6:21 PM Fri | 6502 characters

व्यक्ति 1 सभा में से - अरे भाई हम तो प्रवचन सुनने आए थे,परंतु मुनिराज तो ध्यान में लीन है और मुझे देर हो रही है
व्यक्ति 2 - हां तुम सत्य कहते हो साधु जनों या सज्जनों की संगति को धन व्यय करके भी प्राप्त करना चाहिए
व्यक्ति 3 - हा भैया प्रवचन से हमे ज्ञान प्राप्त होगा ,सुख का मार्ग मिलेगा
व्यक्ति 4 - भाई तुम कुछ भी कहो अब मै और अधिक समय व्यर्थ नहीं करना चाहता , आचार्य का भी कोई कर्तव्य है ना की इतने लोग अपना कार्य छोर कर यहां है
व्यक्ति 5 - तुम्हे जाना हो तो जाओ परंतु वे मुनि है ,किसी के आधीन नही जो किसी के आने पर उपदेश देंगे ही वास्तव में हमारे पुण्य का उदय अभी नहीं हुआ है
व्यक्ति 3 - भैया सांसारिक कार्य तो चलते ही रहते है ,रुकते नही,फिर क्यों मुनिराज के वचनों को सुनने से वंचित रहूं कितना भी समय हो मैं प्रवचन सुन कर ही जाऊंगा
पद्म - थोड़ा धीरे बोलिए आदरणीय कही बात चीत से मुनिराज का ध्यान भंग न हो ,अभी ये सिद्धों से बाते कर रहे है

Reminders Skins Move to folder Encryption Remove

6:25 4G

Title

July 28 6:21 PM Fri | 6502 characters

(तब ही मुनिराज का ध्यान भंग होता है वे जन समूह को सन्मुख देख कर उपदेश देने लगते है)
सभा - मुनिराज की जय !× 3

मुनिराज - शुधात्मा को जाने बिना दुख ही दुख है सुख के लिए अहिंसा दया , सत आचरण करना चाहिए ,यदि संभव हो तो मुनि धर्म धारण करना चाहिए

मुनि भक्त - अरे यह बात मैंने आज तक नहीं सुनी अपूर्व बात है , धन्य है मुनि दशा , मेरे जीवन में ऐसी दशा कब होगी

(विचार मग्न पद्म उठ कर आचार्य के सम्मुख पहुंचा)
पद्म - पूज्यवर आपके उपदेश सुन के मैं संसार का स्वरूप जान गया हु , है नाथ मुझे जिन दीक्षा प्रदान कीजिए
मुनिराज - है भव्य ,तुम्हारे विचार विचार तो उत्तम है किंतु परिजनों को अनुमति आवयशक है

पद्म विचार करते हुए जाते है

संत साध बन के विच म्यजिक

Reminders Skins Move to folder Encryption Remove

6:26 4G

Title

July 28 6:21 PM Fri | 6502 characters

पद्म विचार करते हुए जाते है

संत साधु बन के विच्रु ... म्यूजिक

पद्म मां के पास पहुंच कर - मां क्या तुम मुझे अच्छा पुत्र मानती हो ,मेरा हित चाहती हो ,और अनंत काल तक मेरी ही मां बनी रहना चाहती हो

मां - हां पद्म क्या बात है आज तुम ऐसी गंभीर बातें क्यों कर रहे हो

पद्म - मां मैने मुनि होने का निश्चय किया है , मैं सांसारिक बंधनों से मुक्त होना चाहता हु ,तुमसे दीक्षा की आज्ञा चाहता हु ,तुम मुझे आज्ञा दोगी ना ?

Emotional

मां - नही नही ऐसा नहीं बोलो पद्म , अभी तुम्हारी पड़ने - खेलने की आयु हैं

(अचानक पुत्र से मुनि बनने की बात सुन कर मां का हृदय वियोग की कल्पना से तड़प उठा , उसने तरह तरह से पद्म को समझाने का प्रयत्न किया ,किंतु सब व्यर्थ ,पद्म ने दरण निश्चय

Reminders Skins Move to folder Encryption Remove

Title

July 28 6:21 PM Fri | 6502 characters

(अचानक पुत्र से मुनि बनने की बात सुन कर मां का हृदय वियोग की कल्पना से तड़प उठा , उसने तरह तरह से पद्म को समझाने का प्रयत्न किया ,किंतु सब व्यर्थ ,पद्म ने दरण निश्चय कर लिया था , जब मां का प्रयास भी विफल रहा तो उनके नेत्रों से अश्रु धारा फूट निकली)

हट तजो बेटा... (मां और बेटा का संवाद)

मां रोते हुए।।।।
(सभी सेठानी को देखने लगे)
पद्म - नही मां मैं अपने जन्म के लिए लज्जित हु , अब अनंत काल तक जन्म न लूंगा , किसी को कष्ट न दूंगा ,इतने वर्ष संयम बिना व्यर्थ गवाएं ,परंतु अब न गवाऊंगा
मां - तुम जानते हो पद्म की में तुम्हे कितना प्यार करती हु तुम ही मेरी एक मात्र संतान हो मैं अपनी ममता को कैसे तजु नही नही पद्म मैं ऐसा नहीं होने दूंगी तुम ही अनंत काल तक मेरे पुत्र कहलाओगे
पद्म - मैं जानता हूं मां,इसीलिए तुमसे दीक्षा की आज्ञा चाहता हु,अब मै इस ही जन्म तक तुम्हारा पुत्र कहलाऊंगा, मैं प्रतिज्ञा

अब तुम अपनी ममता को मेरी राहों में न लाओ ,तुम्ही ने तो मुझे शिक्षा दी है

मां - पर ऐसा संभव कैसे के बाद पद्म का निश्चय गलत तो नहि पर मां का मोह पद्म को रोक रहा है वियोग के डर से मैं स्वार्थी बन रही हु , धिक्कार है मेरा मोह जो सन्मार्ग पर चलने वाले पुत्र के सुख में ही बाधा बन रहा है , कोन कहता है की मैं रोती हु,अरे में मोहि पुत्र के सिंह गर्जना से मोहि मां का मोह नेत्र पथ से बह कर पुत्र के पथ को प्रक्षालित कर रहा है

सेठ - फिर ये आसू क्यों गिर रहे है ?

मां - ये आसू नही है जन्म मृत्यु को जीतने वाले पुत्र पर दोनो नेत्रों से जल भर कर महा मस्तकाभिषेक कर रही हु ,और सुनो पद्म तुम्हे मेरी ममता को सौगंध तुम अनंत काल तक मेरे ही पुत्र रहोगे जाओ मैं तुम्हे भवनाशनी जैनेश्वरी दीक्षा की सहस अनुमति प्रदान करती हु

पद्म - ठीक है मां मैं जानता था तुम अवश्य अनुमति दोगी ,तत्व ज्ञानी जो हो ,और मेरी गुरु भी

संसार लगने लगा म्यूजिक (इस ही बीच दीक्षा होगी)

6:26 4G

Title

July 28 5:35 PM Fri | 2618 characters

पहल दृश्य

प्रवचनकार द्वारा समयसार एवं कुंदकुंद आचार्य का परिचय

(इसी बीच लाइट ऑफ)

(लाइट ऑन के साथ)..... ग्वाला अपनी गायों को चराने जंगल ले जा रहा है।

एक तरफ कुछ ग्रामीण कोंडेश की प्रशंशा करते हुए उसे निहार रहे है। कोंडेश यहां बहा घूम कर आनंदित मन से गायों से बाते करता हुआ एक पेड़ के नीचे बैठकर भजन गुनगुनाता है ।

(Bg music)

कुछ दिनों बाद........

जंगल की ओर बड़े बड़े सेठ जाते देख ग्वाला बोलता है

कोंडेश- मेने जीवन में तो इन्हे यहां नही देखा ये यहां क्यों आए है । चलकर देखना चाहिए।

कोमल शरीर वाले यह धनवान लोग नंगे पैर गर्मी सहते जा रहे है कोई बात अवश्य है, अरे बह नग्नावस्था में कौन तपस्वी बैठा है ।

मुनिराज- सभी जीव भगवान है जगत के जड़ चेतन सभी

Reminders Skins Move to folder Encryption Remove

Title

July 28 5:35 PM Fri | 2618 characters

मुनिराज- सभी जीव भगवान है जगत के जड़ चेतन सभी का परिणामन स्वतंत्र है, तुम चेतन स्वरूप भगवान हो जो कभी जलता नही गलता नही sasvat अमर है स्वयं को पहिचान कर स्वयं में लीन हो जाए तो सभी सुखी हो जाएं। कोई दुखी नहीं होगा

(कोंदेश उपदेश समझने का प्रयास करने लगा)

कोंडेश- लेकिन में दुखी ग्वाला भगवान केसे हो सकता हु।

(साम तक सोचता रहा की सभी तो मुझे मूर्ख कहते है इन मुनिराज ने मुझे भगवान कहा। लोटे समय बारिश में बह भीग गया । बिस्तर पर लेटे लेटे उपदेश में विषय में सोचता रहा।

कोंदेश (मन में) - यदि में भगवान बन गया तो गाएं कौन चरायेगा अरे गाएं भी तो भगवान बन सकती है ,

(सुबह कोंडेश के न उठने पर उसकी मां उसे जगाने आती है)

मां- अरे इसे तो बहुत तेज बुखार है । (मां वैद्य को बुलाती है ।

(एक सप्ताह में बुखार तो उतर गया परंतु ग्वाला जंगल न

6:26 4G

Title

July 28 5:35 PM Fri | 2618 characters

.

(एक सप्ताह में बुखार तो उतर गया परंतु ग्वाला जंगल न जा सका।

कोंडेश - मां गाय.....(घबरा कर)

मां- रहने दे, अभी और कुछ दिन आर कर ।

(पंद्रह दिन बाद जब कोंडेहस जंगल गया उनसे देखा जंगल में चारो ओर आग लगी। थी परंतु उस भीषण आग में उसे एक हरा भरा पेड़ मिला बह आग के बीच से उसके पास गया ।

तभी उसे मुनिराज के उपदेश का स्मरण हुआ)

कोंडेश - विश्व के जड़ चेतन का परिणामण स्वतंत है कोई किसी का करता धर्ता नही है

अचानक से उसकी नजर पेड़ के कोठार पर पड़ी है ।

अरे! यह क्या। है अरे वाह यह। तो कोई धार्मिक ग्रंथ मालूम पड़ता है । पर में। तो पड़ना ही नही जानता । शायद इस ग्रंथ के कारण यह वृक्ष जला नही । यदि में पड़ा लिखा होता तो पद लेता

परंतु अब में इसका क्या करूं।

ठीक है । यह ताड़ पत्र में उन मुनिराज को ही दे दूंगा।

Reminders Skins Move to folder Encryption Remove

6:26 4G

Title

July 28 5:35 PM Fri | 2618 characters

ठीक है । यह ताड़ पत्र में उन मुनिराज को ही दे दूंगा।

(ग्वाला मुनिराज को खोजने जंगल में निकल पड़ा)

(भजन) बे मुनिवर ...।..............

।।।।।।।।।।।।।

(मुनिराज को देख ग्वाला प्रसन्न होकर मुनिराज के पास जाता है)

- हे मुनिवार! यह ताड़ पत्र स्वीकार कर मुझ पर उपकार कीजिए

(ग्वाला मुनिराज को शास्त्र मिलने की संपूर्ण घटना सुनाता है

मुनिराज उसे देख मुस्कुराते है)

(ग्वाला पूछता है) हे मुनिवर क्या यह कोई आत्म है क्योंकि यह जला व गला नही है ।

मुनीराज - हे भव्य! यह आत्म नही है परंतु इसमें हमारी तुम्हारी आत्मा की बात लिखी है ।तुम्हे आत्म गया अवश्य ही होगा और तुम सुखी भी होगे। तुम्हे हजारों वर्षों तक लोग याद करेंगे

Reminders Skins Move to folder Encryption Remove